शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उत्तरशती के प्रथम दशक के आँचलिक उपन्यास एवं उपन्यासकार

एकता गायकवाड (शोधार्थी)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य में सामजिक यथार्थ को नए ढंग से प्रस्तुत करने की वैज्ञानिक पद्धति है। प्रेमचंद से शुरू हुई यह धारा विभिन्न कालों से होती हुई अपने सामाजिक सरोकारों को प्रमाणित करती रही है। उपन्यास के क्षेत्र में लम्बी परमपा दिखाई देती है। इनमें आधुनिक भावबोध को अभिव्यक्ति मिली है। आजादी की बाद जब साहित्यकारों का ध्यान देश के ग्रामांचलों की ओर गया, तो उन्हें वहां उनका सामना ऐसी स्थितियों से हुआ, जिसकी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। भारत के मर्मस्थान का स्पर्श साहित्यकारों ने किया और अंचल की आवाज बनकर उन्होंने साहित्य लेखन किया। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रथम दशक के आंचलिक उपन्यास और उपन्यासकारों पर विचार किया गया है

भूमिका

उत्तरशती का प्रथम द शक सन् 1950-60 है। प्रजातांत्रिक भारत में प्रथम 'आम चुनाव ' के माध्यम से संसदीय प्रणाली का आरम्भ हुआ। देश में संविधान के प्रावधानों का क्रियान्व यन किया जाने लगा। जिसके फलस्वरुप 1951 से 'ग्राम विकास एवं कृषि विकास केन्द्रित प्रथम पंचवर्षीय योजना का क्रियान्वयन आरंभ हुआ। इसका संकेत हमें 'मैला आँचल' और 'यह पथ बंधु था' (नरेश मेहता) उपन्यासों से प्राप्त होता है। इसके बाद हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में जनपदीय साहित्य के समकक्ष आंचलिकता का विस्तार होने लगा इस दृष्टि से प्रथम दशक तक के प्रमुख आंचलिक उपन्यासों को रेखाकित किया जा सकता है।

आंचलिक उपन्यास और उपन्यासकार

प्रथम दृष्टि डालें तो हमें 'फणीश्वरनाथ रेणु' का 'मैला आंचल' उपन्यास जो स्वतंत्र्योत्तर आंचलिक उपन्यास के लिए निर्विवाद रुप से प्रथम द शक के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं। इनका प्रथम उपन्यास 'मैला आंचल' सन् 1954 में प्रका शित हुआ। इस उपन्यास के अध्ययन से रेणुजी ने भारत की राजधानी से दूर दे श के पिछड़े राज्य बिहार के निकट पिछड़े जिले पूर्णिया के उत्तर में मेरीगंज नामक गाँव से जुड़ा है। इसे हम कुछ तथ्यों के आधार पर स्पष्ट कर सकते हैं। "इसमें उन्होंने अंचल के निवासि यों की निर्धनता , उनका मानसिक पिछडापन, जमींदारी, आतंक और तहसीलदार का शोषण, जातिगत आधार पर आपस की फूट और घात-प्रतिघातों को उपन्यासकार ने इस नग्न यथार्थ को बड़ी निर्ममता से प्रस्तुत किया है।"

वहीं अगर हम फरणीश्वर नाथ' रेणु जी का दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' पर दृष्टि डालें तो इस उपन्यास की कथा भूमि भी पूर्णिया अंचल रहा है। इस उपन्यास में भी भूमि अंचल की प्रकृति के अनुसार वर्णित है। इस में जातिवाद , रुढिग्रस्तता, ग्राम्य परिवे श की जीवनचर्चा एवं जीवन शैली, लोकसंगीत , लोकगीत आदि का समावेश दिखाई देता है। वहीं अगर 'उदय शंकर

भट्ट' के उपन्यास 'सागर लहरें और मनुष्य ' बहुचर्चित उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार ने बम्बई महानगर के पश्चिमी तट पर वरसोवा के मछुआरों की सामूहिक जिंदगी , समुद्र के साथ मछुआरों का संघर्ष और अभावों से लड़ती जिंदगी का चित्र साकार किया है।

"परिनिष्ठित हिन्दी में बम्बई के मछुआरों की भाषा के सानुपातिक मिश्रण से उपन्यास की भाषा में अद्भुत यथार्थ और व्यंजकता पैदा हो गयी है।"

इसी प्रकार नागार्जुन के उपन्यास में अगर हम दृष्टि डालें तो उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'बलचनमा', बाबा बटेसरनाथ', 'रतिनाथ की चाची ', 'वरुण के बेटे' आदि में ग्राम जीवन की विडम्बनाओं के साथ ग्रामीण मानसिकता में वैचारिक बदलाव है। 'बलचनमा' उपन्यास मिथिलाचंल के ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास है। जिसमें प्रमुख रूप से ग्राम्य संस्कृति के दर्शन होते हैं।

"अब बलचनमा बड़ा हो गया था .....गाँव छोडकर शहर भाग आया था बेशक उसे 'अक्षर' ज्ञान नहीं था, लेकिन 'सुराज' इन्किलाब जैसे शब्द से उसके अंदर चेतना व्याप्त हो गई थी। और फिर शोषकों से संघर्ष करने के लिए।"

वहीं अगर हम इनके दूसरे उपन्यास पर दृष्टि डालें तो 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में नागार्जुन में लोक से अपेक्षित और समाज से बहिष्कृत स्त्री की पीड़ा दायक त्रासदी के माध्यम से नागार्जुन ने स्त्री जीवन के कटु सत्य को आंचलिक परिवेश में उद्घाटित करने का प्रयास किया है। नागार्जुन ने उच्च जाति की अन्तः सामाजिक विडम्बना को उजागर किया है।

इस सन्दर्भ में 'रांगेव राघव' के उपन्यासों पर दृष्टि डालें तो उनका उपन्यास 'कब तक पुकारूं' में उन्होंने चित्रण अत्यन्त सरल और रोचक शैली में किया है , जिसमें उपेक्षित समाज 'नट' की चर्चा के गयी है । इस उपन्यास के माध्यम से उन्होंने दलितों की जीवन शैली की विवशता का चित्रण किया है। साथ-साथ प्रेम की संवेदना इतने गहरे और तीव्र रुप में अंकित की है जो असाधारण कही जा सकती है। "शिल्प की दृष्टि से भी 'कब तक पुकारूं' में प्रयोग की सजगता है।"

भैरव प्रसाद गुप्त का 'सती मैया का चौरा' में उन्होंने किसानों के शोषण के साथ-साथ उनकी वर्ग चेतना और जुझारु संघर्ष का अंकन किया है। साथ ही उपन्यास में ग्रामीण जीवन के अभिशाप के रूप में नेताओं सरकारी अफसरों , पंडों-पुरोहितों, शिक्षण-संस्थानों आदि की यथार्थ भूमिका का चित्रण इनके उपन्यासों में सहज रूप से दिखाई देता है। अतः हम इन उपन्यासों को देखें तो उत्तरशती के प्रथम दशक 'मैला आँचल', 'परती परिकथा ', ' सागर, लहरें और मनुष्य ', 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची ', 'कब तक पुकारूं', 'सती मैया का चौरा', आदि हैं। इस दशक के उपन्यासों में स्वतंत्रता पूर्व के उत्पीड़न , सामंतवादी प्रवृति के साथ विकास के स्वप्न भी हैं। ग्राम्य अंचल की सरल सहज जीवन शैली के साथ ग्रामीण मानसिकता के विरोधाभास और अंधविश्वास भी हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास-गोपालराय पृष्ठ 243
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास-गोपालराय पृष्ठ 256
3. बलचनमा- नागार्जुन, पृष्ठ 162
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास-गोपालराय पृष्ठ 214-15